

‘तार सप्तक’ के कवियों की प्रमुख कृतियाँ

कवि (ई. में)	कृतियाँ (ई. में)		
सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय' (1911-1987)	1. भग्नदूत (1933)	7. अरी ओ करुणा प्रभामय (1959)	13. सागर मुद्रा (1970)
	2. चिंता (1942)	8. आँगन के पार द्वार (1961)	14. पहले मैं सन्नाटा बुनता हूँ (1973)
	3. इत्यलम् (1946)	9. पूर्वा (1965)	15. महावृक्ष के नीचे (1977)
	4. हरी घास पर क्षणभर (1949)	10. सुनहले शैवाल (1966)	16. नदी की बाँक पर छाया (1981)
	5. बावरा अहेरी (1954)	11. कितनी नावों में कितनी बार (1967)	17. ऐसा कोई घर आपने देखा है (1986)
	6. इंद्रधनुष रौंदे हुए ये (1957)	12. क्योंकि मैं उसे जानता हूँ (1970)	

रामविलास शर्मा (1912-2000)	1. रूपतरंग (1956) 2. सदियों के सोए जाग उठे (1988)	3. इस अकाल वेला में (1988)	4. बुद्ध वैराग्य तथा प्रारंभिक कविताएँ (1997)
गजानन माधव 'मुक्तिबोध' (1917-1964)	1. चाँद का मुँह टेढ़ा है (1964)	2. भूरि-भूरि खाक धूल (1980)	
प्रभाकर माचवे (1917-1991 ई.)	1. मेपल (1965)	2. स्वप्न भंग	3. अनुक्षण
नेमिचन्द्र जैन (1919-2005)	1. एकान्त (1973)	2. अचानक हम फिर (1999)	
गिरिजाकुमार माधुर (1919-1994)	1. मंजीर (1941) 2. नाश और निर्माण (1946) 3. धूप के धान (1955) 4. शिलापंख चमकीले (1961)	5. जो बंध नहीं सका (1968) 6. भीतरी नदी की यात्रा (1975) 7. छाया मत छूना मन (1978) 8. साक्षी रहे वर्तमान (1979)	9. मैं वक्त के हूँ सामने (1990) 10. मुझे और अभी कहना है (1991) 11. पृथ्वीकल्प 12. कल्पांतर
भारतभूषण अग्रवाल (1919-1975)	1. छवि के बंधन (1941) 2. जागते रहो (1942) 3. मुक्तिमार्ग (1947)	4. ओ अप्रस्तुत मन (1958) 5. कागज के फूल (1963) 6. एक उठा हुआ हाथ (1970)	7. उतना वह सूरज है (1977) 8. अनुपस्थित लोग 9. अग्निलीक

सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय'

भाषा, समाज व काव्य के संदर्भ में अज्ञेय के कथन-

- "मैं उन व्यक्तियों में से हूँ- और ऐसे व्यक्तियों की संख्या शायद दिन प्रतिदिन घटती जा रही है- जो भाषा का सम्मान करते हैं और अच्छी भाषा को अपने आप में एक सिद्धि मानते हैं।"
- "व्यक्ति समाज 'में' स्वतंत्र है, समाज 'से' नहीं।"
- "उस साहित्य की कोई प्रतिष्ठा नहीं हो सकती जिसमें कोई सांस्कृतिक अस्मिता नहीं होती।"
- "काव्य सबसे पहले शब्द है और सबसे बाद में भी यही बात बच जाती है कि काव्य शब्द है।"

अज्ञेय के संदर्भ में विद्वानों के कथन

- "आधुनिक साहित्य में मानवीय व्यक्तित्व व उसकी सर्जनात्मकता की सबसे गहरी चिंतना अज्ञेय के कृतित्व में मिलती है।"

- रामस्वरूप चतुर्वेदी

- "वे अपनी सोच व तकनीक में आधुनिक हैं।" अज्ञेय की प्रकृति प्रेम में एक विराटता, एकांत और सन्नाटा है।" -बच्चन सिंह

- "प्रसाद ने अनुभूति को दर्शन में घुलाया जबकि अज्ञेय ने दर्शन को फिर से अनुभूति में घुलाने की राह अपनी कविता के जरिये निकाली।"

-विजयदेव नारायण साही

मुक्तिबोध

- मुक्तिबोध को भयानक कवियों का कवि कहा जाता है।
‘चाँद का मुँह टेढ़ा है’ काव्य संकलन में अधिक जटिल, बिंबों की सघनता तथा ठेठ देशी प्रतीकों वाली कविताओं की बहुलता है।
- मुक्तिबोध की कविताओं में नाटकीयता और रहस्य मुख्य रूप से विद्यमान हैं।

मुक्तिबोध ने अपने काव्य संकलन का नाम 'चाँद का मुँह टेंढ़ा है' प्रतीकात्मक रूप में रखा है। सुंदरता की अभिव्यक्ति के लिये चाँद सर्वाधिक प्रचलित उपमान रहा है। मुक्तिबोध चाँद के मुँह को टेंढ़ा बताकर पारंपरिक व अभिजात सौंदर्यबोध को नष्ट करना चाहते हैं।

- 'अँधेरे में' मुक्तिबोध की बहुचर्चित व लंबी कविता है। सन् 1964 में 'कल्पना' पत्रिका में 'अँधेरे में' कविता का पहला प्रकाशन 'आशंका के द्वीप अँधेरे में' नाम से हुआ था।

अँधेरे में कविता पर आलोचकों के विचार

- "यह कविता देश के आधुनिक जन इतिहास का स्वतंत्रता पूर्व और पश्चात एक दहकता इस्तापी दस्तावेज है। इसमें अजब और अद्भुत रूप से व्यक्ति और जन का एकीकरण है।" -शमशेर बहादुर सिंह
- "'अँधेरे में' के लंबे खंडों में कवि की समस्या है समाज के उत्थान-पतन और आंदोलन के बीच अपनी रचना के प्रेरक तत्वों का अभिज्ञान, रचना कैसे बाहर से अंदर आती है फिर कैसे बाहर दूर-दूर तक परिव्याप्त हो जाती है।" -रामस्वरूप चतुर्वेदी
- "अस्मिता की खोज" -नामवर सिंह
- "अपराध भावना का अनुसंधान" तथा "अरक्षित जीवन की कविता" -रामविलास शर्मा
- "अंतःस्थल का विप्लव" -निर्मला जैन
- "आत्म संशोधन का अनुसंधान" -इंद्रनाथ मदान
- "लावा" -प्रभाकर माचवे
- "वह (काव्य नायक) संघर्षरत है इसलिये उसकी पीठ पर नहीं वक्ष पर घाव है। वह सकर्मक है, शक्ति का पूंज है, किंतु फटेहाल है, क्योंकि वह करुणा से युक्त होकर समाज के शोषित जनों का प्रतिनिधि बनता है। यह संस्कृति पुरुष मध्यवर्ग के आदर्शवादी दृढ़चरित्र और जीवन की सुविधाओं से समझौता न करने वाले व्यक्ति का प्रतीक है।" -विश्वनाथ त्रिपाठी

मुक्तिबोध के संदर्भ में विद्वानों के मत

- "यह तथ्य अनदेखा नहीं किया जा सकता कि 'कविता के नए प्रतिमान' के केंद्र में मुक्तिबोध हैं।" -नामवर सिंह
- "नयी कविता में मुक्तिबोध की वही स्थिति है जो छायावाद में निराला की थी।" -नामवर सिंह
- "मुक्तिबोध को 'अँधेरे में' कविता के नायक से अलग करके देखना असंभव है।" -रामविलास शर्मा
- "मुक्तिबोध के काव्य में अस्तित्वाद का लघुमानव भी है और रहस्यवाद का विराट पुरुष भी।" -रामविलास शर्मा
- "मुक्तिबोध का काव्य संकलन 'चाँद का मुँह टेढ़ा है' एक बड़े कलाकार की स्केच बुक लगता है।" -रामस्वरूप चतुर्वेदी
- "किसी और कवि की कविताएँ उसका इतिहास न हो, मुक्तिबोध की कविताएँ अवश्य उनका इतिहास हैं।" -श्रीकांत वर्मा
- "अज्ञेय और उनके सहयोगी कवि शमशेर बात के कवि हैं, मुक्तिबोध खबर के या भयानक बात के। इसलिये उनकी कविता में नाटकीयता और रहस्य का वातावरण है।" -रामस्वरूप चतुर्वेदी

- “कवि के रचनाशिल्प को देखकर लग सकता है कि जैसे एक विराट खंडहर पूरा नए तौर पर बनाया गया हो, जिसमें से गुजरने पर भव्यता और एक खासतौर के अवसाद का एहसास एक साथ होता है।”
-रामस्वरूप चतुर्वेदी
- “बाद के जीवन की बहुविध छवि को लेकर विकसित होने वाली नयी कविता के अग्रज कवि सच्चे अर्थों में मुक्तिबोध ही हैं।”
-डॉ. नगेंद्र
- “मुक्तिबोध की कविता में प्रयोगवाद और प्रगतिवाद का रासायनिक मिश्रण है। वे एक ही साथ प्रयोगवादी भी हैं और प्रगतिवादी भी। किंतु दोनों की अतिरेकवादी प्रवृत्तियाँ उन्हें मान्य नहीं।” -बच्चन सिंह
- “मुक्तिबोध फैटेसी का जब-जब उपयोग करते हैं सत्य की अभिव्यक्ति के लिये...सत्य की खोज के लिये...सत्य की खोज की प्रक्रिया को प्रेरणा देने के लिये।”
-मैनेजर पांडेय
- “मुक्तिबोध एक कठिन समय के कठिन कवि हैं। उन्होंने अपने सत्य को कठिन वैचारिक एवं भावनात्मक संघर्ष से पाया और कविता में चरितार्थ किया।”
-अशोक वाजपेयी
- “उनकी भाषा-अनगढ़ तेजोदिप्त भाषा है।”
-निर्मला जैन

दूसरा सप्तक के कवियों की प्रमुख कृतियाँ

कवि (ई. में)	कृतियाँ (ई. में)		
शमशेर बहादुर सिंह (1911-1993)	1. कुछ कविताएँ (1959) 2. कुछ और कविताएँ (1961) 3. चुका भी हूँ मैं नहीं (1975)	4. इतने पास अपने (1980) 5. उदिता अभिव्यक्ति का संघर्ष (1980) 6. बात बोलेगी (1981)	7. काल तुझसे होड़ है मेरी (1988) 8. कहीं बहुत दूर से सुन रहा हूँ (1995) 9. सुकून की तलाश (1998)
भवानी प्रसाद मिश्र (1913-1985)	1. गीत फरोश (1956) 2. चकित है दुख (1968) 3. अँधेरी कविताएँ (1968) 4. गांधी पंचशती (1969) 5. बुनी हुई रस्सी (1971) 6. खुशबू के शिलालेख (1973) 7. व्यक्तिगत (1973)	8. परिवर्तन जिये (1976) 9. इद्म न मम् (1977) 10. त्रिकाल संध्या (1978) 11. अंतर्गत (1979) 12. अनाम तुम आते हो (1979) 13. शरीर कविता फसलें और फूल (1980) 14. कालजयी (1980)	15. मानसरोवर दिन (1981) 16. संप्रति (1982) 17. नीली रेखा तक (1984) 18. तूस की आग (1985) 19. ये कोहरे मेरे हैं (1993)
शकुंतला माधुर (1922-2004)	1. चाँदनी चूनर (1960)	2. अभी और कुछ (1966)	3. लहर नहीं दूटेगी (1990)
हरिनारायण व्यास (1923-2013)	1. मृग और तृष्णा (1968) 4. आउटर पर रुकी ट्रेन (1994)	2. त्रिकोण पर सूर्योदय (1980)	3. बरगद के चिकने पत्ते (1982)
नरेश मेहता (1922-2000)	<p align="center">मुक्तक काव्य</p> <div> <div>1. बनपाखी सुनो (1957) 2. बोलने दो चीड़ को (1961) 3. मेरा समर्पित एकांत (1963)</div> <div>4. उत्सवा (1979) 5. तुम मेरा मौन हो (1982) 6. अरण्या (1985)</div> <div>7. आखिर समुद्र से तात्पर्य (1988) 8. पिछले दिनों नंगे पैरों (1989) 9. चैत्या (1993)</div> </div> <p align="center">खंडकाव्य</p> <div> <div>1. संशय की एक रात (1962) 2. मेहाप्रस्थान (1964)</div> <div>3. प्रवाद पर्व (1977) 4. शबरी (1977)</div> <div>5. प्रार्थना पुरुष (1985)</div> </div>		
धर्मवीर भारती (1926-1997)	1. ठंडा लोहा (1952) 2. कनुप्रिया (1959)	3. सात गीत वर्ष (1959) 4. देशान्तर (1960)	5. सपना अभी भी (1993) 6. आद्यंत (1999)

शमशेर बहादुर सिंह

- “भाषा में बोलचाल के गद्य का लहजा और लय में संगीत की चरम अमूर्तन इन दो परस्पर प्रतिरोधी मनःस्थितियों को उनकी कला साधती है।”
-रामस्वरूप चतुर्वेदी
- “जीवन के कटुतम संघर्षों को लेकर उन्हें कविता में एकदम तरल बना सकना शमशेर के काव्य-व्यक्तित्व की पहचान है।”
-रामस्वरूप चतुर्वेदी
- “चित्रकला, संगीत और कविता घुल-मिलकर उनके यहाँ रचना संभव करते हैं।”
-रामस्वरूप चतुर्वेदी
- “जागतिक संदर्भों में कम से कम रहने पर भी शमशेर में हमें एक पूर्ण रचना संसार दिखाई देता है।”
-रामस्वरूप चतुर्वेदी
- “उनकी काव्यभाषा में संज्ञापदों (शब्दों) से कुछ अधिक महत्त्व सर्वनामों, क्रियापदों और अवयवों का है।”
-रामस्वरूप चतुर्वेदी
- “शमशेर की आत्मा ने अपनी अभिव्यक्ति का एक प्रभावशाली भवन अपने हाथों तैयार किया है। उस भवन में जाने से डर लगता है- उसकी गंभीर प्रयत्न साध्य पवित्रता के कारण।”
-गजानन माधव ‘मुक्तिबोध’

- “शमशेर की मूल मनोवृत्ति एक इंप्रेशननिस्टिक चित्रकार की है।”
-गजानन माधव ‘मुक्तिबोध’
- “प्रणय जीवन का प्रसंगबद्ध रसवादी कवि।”
-गजानन माधव ‘मुक्तिबोध’
- “शमशेर कवियों के कवि हैं।” -अज्ञेय
- “शमशेर ‘मूड्स’ के कवि हैं किसी विजन के नहीं।” -मलयज
- “शमशेर की शमशेरियत”। -विष्णु खरे
- “शमशेर का गद्य हिंदी का जातीय गद्य है।” -रामचंद्र तिवारी
- “शमशेर का काव्य रीतिवादी रोमानी, सौंदर्यबोध और मार्क्सवादी विवेक के द्वंद्व का काव्य है।” -रामविलास शर्मा
- “वे मुख्यतः प्रेम और प्रकृति-सौंदर्य के कवि हैं- कहीं दोनों अलग हैं कहीं दोनों का अद्भुत रासायनिक घोल।” -बच्चन सिंह
- “उनके प्रेम में गहरी आसक्ति भी है और छायावादी पवित्र वायवियता भी।” -बच्चन सिंह
- “शमशेर की कविताओं का आप किसी अन्य अभिप्राय के लिये इस्तेमाल नहीं कर सकते। वह आत्यंतिक अर्थ में परम नैतिक कविता है, प्रार्थना की तरह।” -अशोक वाजपेयी

अपने काव्य संकलन 'चुका भी हूँ मैं नहीं'
की भूमिका में शमशेर लिखते हैं-

- "अपनी काव्य-कृतियाँ मुझे दरअसल सामाजिक दृष्टि से कुछ बहुत मूल्यवान् नहीं लगतीं। उनकी वास्तविक सामाजिक उपयोगिता मेरे लिये एक प्रश्नचिह्न-सा ही रही है, कितना ही धुँधला सही।"
- "काव्य कला समेत जीवन के सारे व्यापार एक लीला ही हैं।...कला का संघर्ष समाज के संघर्षों से अलग कोई चीज नहीं हो सकती।"

भवानी प्रसाद मिश्र

- भवानी प्रसाद मिश्र 'गांधीवादी' विचारधारा के कवि हैं, कहानीकार उदय प्रकाश ने मिश्र जी को 'कविता का गांधी' कहा है।
- इनकी अधिकांश कविताओं में बोलचाल की शब्दावली तथा बोलचाल के लहजे का प्रयोग हुआ है।
- इन्होंने 'छंदमुक्त' एवं 'छंदबद्ध' दोनों ही प्रकार की कविताएँ लिखी हैं।
- इनकी भाषा एवं अभिव्यक्ति में लोक-जीवन के प्रभाव स्पष्ट रूप से लक्षित होते हैं।

नरेश मेहता

- इनकी आरंभिक कविताओं में ऋग्वैदिक ऋचाओं के प्राचीन बिंबों का प्रभाव दिखाई देता है।
- 'दूसरा सप्तक' में संगृहीत इनकी कविता 'किरण धेनुएँ' तथा 'उपस' में उपर्युक्त बिंबों का प्रभाव स्पष्ट लक्षित होता है।
- इनके बिंबों में सौंदर्य और ताजापन है।
- 'दूसरा सप्तक' के अपने वक्तव्य में अपनी कविताओं के संदर्भ में वह कहते हैं कि अपनी कविताओं में वह 'आग' लिखना चाहते हैं।
- 'संशय की एक रात' नरेश मेहता की लंबी व नाट्य शैली में लिखी गई कविता है। इस कविता में युद्ध को लेकर 'राम' के मन में उठते हुए द्वंद्व का चित्रण किया गया है।
- 'समय देवता' कविता के संदर्भ में महत्त्वपूर्ण तथ्य-
 - ◆ 'मेरा समर्पित एकांत' संग्रह की कविता है।
 - ◆ इसे कवि ने 'नयी कविता' की पहली लंबी कविता कही है।
 - ◆ इसमें धरती के विभिन्न भागों का सांस्कृतिक व राजनीतिक चित्रण प्रस्तुत किया गया है।
 - ◆ इसमें विलंबित बिंब का विधान किया गया।
 - ◆ इस कविता पर वैदिक बिंबों का स्पष्ट प्रभाव दिखाई देता है।

धर्मवीर भारती

- 'व्यक्ति-स्वातंत्र्य' इनकी कविताओं का केंद्र बिंदु है।
- आलोचकों ने इनके प्रारंभिक काव्य संग्रह 'ठंडा लोहा' को 'केंद्र भावुकता' का काव्य कहा है।

रघुवीर सहाय

- 'सीढ़ियों पर धूप में' संकलित कविताओं में रोमानियत का प्रभाव है।
- इसके अतिरिक्त उनके अन्य कविता संग्रहों में नए कला-प्रयोगों तथा रोमानियत मुक्त राजनीतिक व सामाजिक विमर्श की कविताएँ मिलती हैं।
- 'आत्महत्या के विरुद्ध' काव्य संग्रह के लिये 'बच्चन सिंह' ने लिखा है- "यह संग्रह जीवन में होने वाली आत्महत्याओं के विरुद्ध ही नहीं है बल्कि साहित्य की हत्या करने वाले बीटनीकों और अकवितावादियों के विरुद्ध भी है।"

कविता के संदर्भ में रघुवीर सहाय के महत्त्वपूर्ण कथन

- "विचारवस्तु का कविता में खून की तरह दौड़ते रहना कविता को जीवन और शक्ति देता है और यह तभी संभव है जब हमारी कविता की जड़ें यथार्थ में हों।"
- "रचना के लिये किसी न किसी रूप में वर्तमान से पलायन आवश्यक है। कोई कोई ही इस पलायन को सुरुचिपूर्वक निभा पाते हैं...वर्तमान से मुक्त होने का प्रयोजन कालातीत होता है, मृत जीवन का भूत बनना नहीं।"